# बाबासाहेब डॉ. भीमराव आंबेडकर के चिंतन म प्रतिबिम्बित सम्राट अशोक का बौद्ध धम्म

**(Babasaheb Dr. Bhimrao Ambedkar ke Chintan me Pratibimbit Samrat Ashok ka Bauddh Dhamm)**

**बौद्ध अध्ययन म एम०फिल० की उपाधि हेतु**

**प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध**

**सत्र 2015-16**

**शोधार्थी**

**अचना भोजराज पाटील**

**पंजीयन स. 2015/03/213/002**

**शोध-निदशक**

**डॉ. सुरजीत कुमार सिंह**

**प्रभारी निदशक**

**डॉ. भदन्त आनन्द कौसल्यायन बौद्ध अ न्द्र**

## डॉ. भदन्त आनन्द कौसल्यायन बौद्ध अध्ययन केन्द्र

## संस्कृति विद्यापीठ

## महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

(संसद द्वारा पारित अधिनियम,1997 क्रमांक 3 के अंतगत स्थापित)

पोस्ट: हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स,वधा-442005 महाराष्ट्र, भारत

# अनुक्रमणिका


| क्र. | विवरण | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|
| | घोषणा-पत्र | |
| | प्रमाण-पत्र | |
| | आभार | |
| | भूमिका | |
| प्रथम अध्याय: | **बौद्ध धम्म का ऐतिहासिक पार्श्वभूमि** | 07 |
| द्वितीय अध्याय : | **सम्राट अशोक का बौद्ध धम्म म** योगदान | 17 |
| तृतीय अध्याय: | बाबासाहेब डॉ. **भीमराव आंबेडकर का बौद्ध धम्म म** योगदान | 31 |
| **चतुर्थ अध्याय** : | बाबासाहेब डॉ. **भीमराव आंबेडकर के चिंतन म प्रतिबिम्बित सम्राट अशोक का बौद्ध** धम्म | 50 |
| **निष्कर्ष** | | 59 |
| **परिशिष्ट** | | 61 |
| संदर्भ-ग्रंथ सूची | | 66 |

बाबासाहेब डॉ. भीमराव आंबेडकर के चिंतन म प्रतिबिंबित

# सम्राट अशोक का बुद्ध धम्म

## भूमिका

आज से २६०० वष पूव हम जिस महामानव ने अपने विचारमय ज्ञानज्योति से पूरे भारतवष को प्रदिप्त कर दिया था। ऐसे महामानव भगवान बुद्ध के नैतिक मूल्यों की आज पूरे विश्व को आवश्यकता है। क्योकि पूरे विश्व म आज अराजकता का माहोल दिखायी देता है। उसका मूल कारण है। हम अपने नैतिक मूल्यों से कोसों दूर जा रहे है। उनका ह्रास हो रहा है। भगवान बुद्ध के द्वारा हम जो नैतिक शिक्षा प्राप्त हुई थी उसम उन्होंने पूरे समाज के लिए नैतिक मूल्यों को दिया था, जिसके आत्मसात करने से हम दुनिया के मोह, माया,तृष्णा से अलिप्त होने का माग था। भौतिक चीजों को हम आवश्यकता नुसार ही संग्रहीत करते थे। जो की एक मानव हित के लिए और सामाजिक विकास साध्य करने के लिए पयाप्त थे। परंतु वतमान म वैसी परिस्थिती नहीं रही। प्रत्येक मनुष्य यही चाहता है की उसके पास दुनिया की सारी चिजे हों। चाहे फिर हम किसी भी माग का अवलंब क्यों न करना पड़े। जिस तरह समाज म भ्रष्टाचार, आतंकवाद, अन्याय-अत्याचार, शत्रुत्व इन सभी बातों को आज दुनिया म हर तरफ से बढ़ावा ही मिल रहा है। इसे रोकने के लिए हमारे पास कानून जैसी व्यवस्था है। परंतु उसपर भी हमारे भ्रष्टाचारियोंका शिकंजा है। आज अगर उन सभी बातों को रोकना है तो हम भगवान बुद्ध के द्वारा दिये गए चार आयसत्य, आयअष्टंगिक माग और ब्रम्हविहार को समझकर हम आचरणशील होना पड़ेगा तभी हम इन बातोंको रोक सकते है। बुद्ध की समस्त शिक्षा नैतिक एवं मानवीय मूल्यों पर आधारित है। क्योंकि वह अनात्मवादी और अनिश्वरवादी थे। हमारे गहन अध्ययन और वैचारिक दृष्टि से अवलोकन किया जाए तो बुद्ध की शिक्षा और नैतिक मूल्य एक दूसरे के पयाय ह। आज हमारे समाज म जो नैतिक मूल्यों का पतन हो रहा है।

बुद्ध नैतिक मूल्य प्रज्ञा, शील, मैत्री और करुणा इन्हीं सर्वोच्च मूल्यों का प्रतिपादन करते ह। बौद्धकालीन शिक्षा जनतांत्रिक, आदशवाद और नैतिक अवधारणा पर आधारित थी, जिसम अहिंसा प्रमुख रूप म थी। इन नैतिक मूल्यों को अपना सर्वोच्च मानकर सम्राट अशोक ने अपना साम्राज्य विस्तृत किया था। भगवान बुद्ध और सम्राट अशोक के काल खंड म केवल २५० वष का अतर था। बुद्ध के बाद उनके नैतिक मूल्यों को अगर आत्मसात किया तो वह है सम्राट अशोक। इतिहास हम यह बताता है कि सम्राट अशोक एक महान सम्राट थे उन्होंने अपने कालखंड म किसी के साथ भी पक्षपात नहीं किया था क्योंकि उनकी पूरी शिक्षा ही भगवान बुद्ध के नैतिक मूल्यों पर आधारित थी उनका सामाजिक, राजकीय और धामिक जीवन बुद्ध धम्म के माग से अनुसरण हुआ था। उनके राजकीय परिवेश म

नैतिकता ही मूल आधार थी। उन्होंने अपने कारकिर्दी का पूरा लेखन अभिलेखों के माध्यम से किया जो की समस्त जगत को ज्ञात हो सके कि उन्होंने अपने जीवन के कौनसे वष म कौनसा काय किया था, यह जानकारी हम प्राप्त होती है। सम्राट अशोक एक बौद्ध उपासक थे, यह हम उनके भाब्रू शिलालेख से पता चलता है। कि सम्राट अशोक अहिंसा नीति को मानने वाले थे, इसका उदाहरण हम कलिंग युद्ध से मिलता है। यह उनके प्रमुख आठ उत्कोण दीघ शिलालेख धौली और जौगड़ से प्राप्तआदेशों से पता चलता है। उनके द्वारा आयोजित तिसरी बौद्ध संगीति म जिस तरह से उन्होंने ६० हजार पाखंडी भिक्षुओंको सन्मानपूवक स्वेत वस्त्र पहनाकर संघ से निकाल दिया था। इस बात से यह प्रमाण प्राप्त होता है को जो बुद्ध धम्म के नैतिक मूल्यों को आत्मसात करते ह वह कभी किसी को अपमानित नहीं कर सकते। सम्राट अशोक को नैतिकताही उनकी धम्म विजय इतिहास की अमर घटना है, जिसे कभी भुलाया नहीं जा सकता। सम्राट अशोक के समय म बुद्ध काल के समान स्त्रियों को पूण स्वतंत्रता थी। स्त्रियां न्यायालय जा सकती थी। सती प्रथा नहीं थी, पुनविवाह का अधिकार था, विवाह म काफी स्वतंत्रता थी, स्त्री घर की स्वामिनी समझी जाती थी, तलाक की सुविधा थी। स्त्रियों को पढ़ाई का प्रावधान था। सम्राट अशोक ने मनुष्य के साथ-साथ पशुओं के लिए भी चिकित्सालय की सुविधा उपलब्ध कराई थी। उन्होंने यात्रियों के लिए सड़क के किनारे घने छाया वाले तथा फल देने वाले वृक्ष लगाए थे तथा पीने के पानी के लिए कुँए खुदवाए थे। इन सभी बातों से बौद्ध धम्म नीति और उनके तत्वोंका ज्ञात होता है। यह उनकी करुणा थी।

सम्राट अशोक के बाद अगर बौद्ध नैतिक मूल्यों को बुद्ध कालीन इतिहास को उजागर करने का महान काय अगर किसी ने किया हो तो वह महान व्यक्ति थे बाबासाहेब डॉ. भिमराव आंबेडकर जिन्होंने पूरे समाज के सामने बुद्ध धम्म के नैतिक मूल्यों को फिर से एक बार दुनिया के सामने रखा और उसे पुन:जागृत कर लोगों को एक नया प्रकाश दिया जिसके प्रकाशित होने से पूरे विश्व म आज बुद्ध धम्म की नैतिकता को मानने के लिए सभी प्रयत्नशील हो रहे ह।

डॉ. आंबेडकर एक दलित समाज म जन्मे थे परंतु उनकी सोच उच्चतम थी। आज भी हमारे समाज की यह मनोदशा है, कि सामाजिक और जातीय भेदभाव है। जिससे हम छुटकारा नहीं मिल पा रहा है, वह एक समय था की बुद्ध ने जाती प्रथा का खण्डन किया था, वह विश्व के प्रथम महामानव थे। उन्हीं की शिक्षा को लेकर डॉ. आबेडकर ने उन मनुवादी प्रवृत्ति के लोगों के विचारों को जला कर बुद्ध के नैतिक मूल्योंका पालन कर दुनिया के सामाने एक नींव रखी जिससे उन्होंने अपने राष्ट्र के सामाजिक हित को देखते हए संविधान म सभी के मानवधिकारों की बात की। बौद्ध धम्म की नैतिकता और सम्राट अशोक के अभिलेखों से तात्पय रखकर उन्होंने संविधान म महिलाओ के लिए मौलिक बात हिन्दू कोड़ बिल के रूप म की, मंदिरो म प्रवेश दिलाया जहा एक तरफ हम सावजनिक स्थल पर जाने का अधिकार नहीं था। ऐसी जगहों पर हम अपने अधिकार दिलाये, उन्होंने इस अधिकार के लढ़ाई के लिए अहिंसा का माग अपनाया जिसके तहत ही हम नाशिक का कालाराम मंदिर और महाड़ के चवदार तालाब का सत्याग्रह किया, उनका कहना था की जिस तालाब का पानी पशु-पक्षी पी सकते ह उस तालाब का पानी दलित क्यों नही पी सकता।

उनका तात्पय यह था की, पानी पीना उतना महत्वपूण नहीं है जितना की एक मानव के द्वारा दूसरे मानव के अधिकारों का हनन हो रहा था।

डॉ. आंबेडकर अपना अनुभव बताते है कि, “अधिकार कानून से नहीं बल्कि समाज के सामाजिक और नैतिक विवेक द्वारा संरक्षित होते ह।” अगर सामाजिक विवेक कानून द्वारा प्रस्तावित अधिकारों को मान्यता देता है तो अधिकार सुरक्षित एवं संरक्षित रहगे। डॉ. आंबेडकर के द्वारा दिया गया संविधान एक बौद्ध धम्म के नैतिक मूल्यों का और सम्राट अशोक के सुशासन काल का सार है। बौद्ध धम्म के जो चार आयसत्य, आयअष्टांगिक माग और ब्रम्ह विहार जो की सामान्य उपासक या दलित शोषित समाज को समझने के लिए उन्होंने बहत ही सरल और सहज तरीके से समझने के लिए हम २२ प्रतिज्ञा दी जो की एक नैतिक मूल्यों को समझने म हम आसानी हो और उस प्रतिज्ञाओं का पालन करने के लिए हम एक नया माग दिया।

सम्राट अशोक ने प्रशासनिक आवश्यकताओं, साम्राज्य को सुदृढ़ बनाने तथा सीमावर्ती राज्य से मधुर सम्बन्ध बनाने हेतु धम्म नीति का अनुसरण किया। इस नीति के अंतगत मानव कल्याण एवं सभी धर्मों का सहिशुद्धता का सिद्धांत प्रमुख था। अशोक ने अपने तेरहव शिलालेख म लिखवाया की उसने शासन के नव वष कलिंग विजय की परन्तु उसे इसम हए भीषण नरसंघार से बहत दुःख हआ है और वह अब सैन्य विजय को त्याग करके धम्म का अनुसरण करेगा। कलिंग युध्द का वणन अपने सभी दीघ शिलालेखों जो की राज्य की सीमाओं पर स्थित है। कि अशोक ने कलिंग विजय के बाद पश्चाताप तो किया परन्तु उसको स्वतंत्र नही किया तथा उसने शान्ति नीति को तभी अपनाया जब राज्य प्राकृतिक सीमाओं को स्पश कर चुका था।सम्राट अशोक ने अपने न्यायधीशों को चेतावनी दी की उसके राज्य म कोई अकारण बंदी न बनाया जाए अशोक ने रज्जुकों को आदेश दिया की जिनको मौत की सजा दी गई है उनको तीन दिन का जीवन दान दिया जाए जिससे वे अपने पक्ष म सत्य प्रस्तुत कर सक। परन्तु इसके साथ ही उसने रज्जुकों को न्याय संबंधी विस्तृत अधिकार प्रदान किए एवं न तो उसने किसी दंड को और न ही मौत की सजा को प्रतिबंधित किया। अशोक के द्वारा नियुक्त धम्ममहामात्र प्रति पाँचवे वष पूरे राज्य म दौरा करते थे तथा उनकी निरीक्षण की सीमा से राजपरिवार भी बहार न था। इस प्रकार धम्म नीति ने उदारता के साथ साथ केन्द्रीकरण को भी स्वीकार किया।

अशोक ने अपने प्रथम शिलालेख म जीव हत्या पर प्रतिबंध लगाया उसने आदेश दिया की यहाँ पर कोई बलि न दी जाए। अशोक ने अपने पुत्रों और पौत्रों से भी धम्म नीति का अनुसरण करने का आवाहन किया। उसने शास्त्र विजय से धम्म विजय को अधिक श्रेष्ठ बताया। वह कहता है कि उसके राज्य म ६०० योजन दूर तक लोग धम्म का पालन करते थे। उसने कई जगहों पर अपने दूत इस प्रयोजन से भेजे ह की लोग धम्म का अनुसरण कर और जहाँ कहाँ भी उसके दूत नहीं पहँच पात ह वहाँ के लोग भी धम्म का पालन कर इसके साथ अशोक ने शान्ति नीति का प्रयोग किया इस प्रकार यदि उपरोक्त विश्लेषण को देख तो यही निष्कष निकलता ह की अशोक की धम्म नीति एक

शान्ति नीति अवश्य थी। यह नीति साम्राज्य म शांति एवं समन्वय के लिए अपनायी गयी न की केवल शान्ति के द्वारा ही शांति की स्थापना के लिए।

सम्राट अशोक के शिलालेख २३०० वष बाद भी उतना ही महत्व रखते ह जो आज के वतमान म दुनिया को युद्ध की नहीं बुद्ध धम्म के नैतिक विचारों की आवश्यकता है यह हम अशोक के अभिलेखों द्वारा पता चलता है। क्योंकि आज के समय म जो आतंकवाद, व्यभिचार, अत्याचार जैसी स्थिति को रोकने के लिए बुद्ध के विचारों की आवश्यकता है। उससे हम एक दूसरे के प्रति प्रेम, आदर, मैत्री और करुणा का भाव रख सकते ह जिसके द्वारा हम समस्त जीवजगत और सभी प्राणियों के प्रति कल्याण की भावना रखते ह जिससे की युद्ध, हिंसा, नफरत और अराजकता के लिए कोई स्थान न हो आज के वतमान म जो हम सामाजिक परिस्थितियों को देखते ह की सगे संबंधी एक दूसरे पर अत्याचार कर रहे ह, आपस म लड़ रहे हैं, बढ़ो का कहीं आदर सत्कार नहीं, कहीं सेवा भाव नहीं इन परिस्थितियों पर मात करने के लिए हम बुद्ध और सम्राट अशोक के काल को याद करना होगा। उनके शिलालेखों के द्वारा जो संदेश जनता को दिया गया क्या उसको याद करना हमारा कतव्य नहीं है? सम्राट अशोक ने जनता के साथ जितना शिथिलतापूण व्यवहार करते थे पर जहा दंड की आवश्यकता हो, तो वहां वे एक न्यायधीश की भूमिका निभाते थे, उसम कोई पक्षपात नहीं होता था। उनके राज्य म मृत्यु दंड को कतई समाप्त नहीं किया था केवल शिथिलता लायी थी। उसी तरह आज के युग म जो अराजकता अत्याचार, आतंको हमले इन सबको रोकने के लिए दंड का जो हमारे संविधान म प्रविधान है वह सभी के लिए समान है परंतु भ्रष्टाचारी लोगों के कारण अमल म नहीं आ रहा है। डॉ. आंबेडकर द्वारा जो संविधान लिखा गया है उसम उन्होंने सम्राट अशोक के काल के सिद्धांतो को समाविष्ट किया गया है परंतु आज हमारे गणतंत्र म जो नैतिक मूल्योंका कोई महत्व नहीं रहा है वह एक काल था अशोक के सभी मंत्रीगण संपूण राष्ट्र के नीतिमूल्य सेवक और धम्म निष्ठ थे परंतु आज वतमान म ऐसी स्थिति नहीं है उस काल म भी मंत्रियों के साथ परिषदों का आयोजन होता था, आज भी हमारे देश म राष्ट्रपति के अंतगत संसद म समितियों का गठन होकर काय चलता है। हमारे देश के चलन पर जो सिंह की मुद्रा है, जो चारों दिशा म गजना करते हुए शक्ति का प्रदशन करती है वह अशोक काल की ही है। जो हमारे देश का राष्ट्र चिन्ह है और जो हमारे देश का गौरव चिन्ह हमारा झंडा जो पूरी दुनिया म हमारे देश का प्रतिनिधित्व करता है उस झंडे पर आज जो धम्मचक्र है वह भी अशोक की देन है, उस पर कि २४ कड़िया हमारे देश के उत्तम गुणों को दशाती है। अशोक के सभी शिलालेख ब्राह्मी लिपि म ह जो पूरे साम्राज्य की राजलिपि थी। उसकी यह नीति वतमान म भी दिखाई देती है हमारी राष्ट्र भाषा हिन्दी के रूप म यह संविधान के अनुच्छेद ३५१ के तहत लागू है जिस तरह से अशोक ने अपने क्षेत्र के पिछड़े और जंगली जनजातियों के लिए दान और उत्थान की व्यवस्था की थी उसी के प्रेरणा से डॉ. आंबेडकर ने संविधान म आदिवासी और मागास वग के लिए विशेष कल्याणकारी योजनाओं को प्रस्तावित किया। इसके लिए अनुच्छेद क्र.३३९, ३४० और ३४१ के तहत काय चल रहा है। जिस तरह अशोक ने अपने प्रशासन म कमचारियों को कार्यों की ज़िम्मेदारी सौंपी थी उसी तरह आज हमारे मंत्री मण्डल म भी सभी मंत्रियों को उनके काय सौंपे जाते ह, जिस तरह से अशोक ने धामिक स्वतंत्रता दी थी उसी तरह आज हम धम्म स्वतंत्रता, आचरण एवं धम्म प्रचार का अधिकार है, लिंग के आधार पे कोई भेदभाव नहीं

है। यह हमारे गणतंत्रम सभी राज्यों म लागू है। उस काल म भी सभी वर्गो का शिक्षा पे अधिकार था आज भी हमारे संविधान के अनुच्छेद २९ के अनुसार शिक्षा का अधिकार है। सम्राट अशोक का सुशासन काल और वतमान की राजनैतिक स्थिति म समानता दिखाई देती है अशोक के सुशासन काल और बुद्ध धम्म के नैतिक मूल्यों से प्रेरणा लेकर और उसपर चिंतन और मनन करके डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ने जो आज हम बहमूल्य ऐसा मौलिक संविधान दिया है यह एक अशोक के महानतम शासन और बुद्ध धम्म के नैतिक मूल्यों की देन है। इसके लिए हम सदैव उनका स्मरण कर बुद्ध धम्म के मूल्यों को आत्मसात करने के लिए अग्रेसर होते ह।

## शोध प्रविधि :

इस शोध को पूण करने के लिए वणनात्मक, व्याख्यात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध प्रविधि का उपयोग किया जाएगा।

## शोध का उद्देश :

१. सम्राट अशोक के अभिलेख और डॉ. आंबेडकर के चिंतन म बौद्ध नैतिक मूल्योंका अध्ययन करना।
२. सम्राट अशोक के अभिलेख और संविधान का अध्ययन करना।
३. वतमान म सम्राट अशोक के अभिलेखों की प्रासंगिकता क्या है इसका अध्ययन करना।
४. डॉ. आंबेडकर के द्वारा परिलक्षित बौद्ध धम्म के नैतिक मूल्योंका समाज पर क्या प्रभाव है इसका अध्ययन करना।
५. बौद्ध नैतिक मूल्यों का ह्रास होने के कारणों को खोज करना।

## अध्यायिकरण

**अध्याय प्रथम**

**बौद्ध कालीन प्राचीन इतिहास**

**ऐतिहासिक पार्श्वभूमि**

## शोध

जिस महामानव ने हम अपने उपदेशो के द्वारा मानव के मुक्ति का माग बताया, जिसने अपने जीवन के 45 वष सम्पूण जगत को शांति का संदेश दिया उसी तथागत भगवान गौतम बुद्ध के नैतिक मूल्यों को आज वतमान म आवश्यकता है। क्योंकि आज के युग म प्रत्येक मानव को सुखी जीवन जिने की अभिलाषा है। उसी अभिलाषा के कारण आज हम नैतिक और अनैतिक म भेद नहीं समझ रहा। इसीलिए हमारे जीवन जगत म अनैतिकता, हिंसाचार, आतंकवाद और भ्रष्टाचार को बढ़ावा मिल रहा है। इन्ही बातों को रोकथाम के लिए हम बुद्ध के धम्म का माग का अनुसरण करना अत्यंत आवश्यक है। बुद्ध के द्वारा हम जो उपदेश दिये गए है वह त्रिपिटक के रूप म संग्रहीत है। सुत्त-पिटक , विनय-पिटक और अभिधम्म-पिटक, सुत्त पिटक म सुत्तों के माध्यम से उपदेश दिये गए है। विनय पिटक म हमारे लिए न्याय व्यवस्था का प्रावधान किया गया है। अभिधम्म म मनोवैज्ञानिक बात ह, जो हमारे चित्त म उत्पन्न हए विकारों को नष्ट करने म मदत करता ह। बुद्ध का विनय पिटक आज का एक तरह का संविधान है। जिसम हमारे जीवन जीने के लिए नियम-कानून बताए गए है। वह एक न्याय-व्यवस्था है, भिक्षु संघ और सामान्य उपासकों के लिए।

भगवान बुद्ध विश्व के पहले महामानव थे जिन्होंने जातिवाद का खंडन कर दुनिया के समक्ष एक नया धम्म दिया जो की आचरणशील है, ग्रहण शील है। उनके उपदेशों का सार है, एक उच्च कोटी का नैतिक आचरण है। जिसके आचरण से सम्पूण मानवजाति का विकास संभव हो सकता ह। समस्त विश्व म शांति प्रस्थापित हो सकती ह। समाज म फैली अराजकता, आतंकवाद, अन्याय, अत्याचार, भ्रष्टाचारको जड़ों के साथ नष्ट कर सकता ह । इसके लिए हम तथागत भगवान बुद्ध की शिक्षा को अपनाना होगा। बुद्ध के धम्म को ग्रहण करना होगा। इन्हीं बुद्ध धम्म के नैतिक मूल्यों को सर्वोच्च मानकर, बौद्ध धम्म नीति को अपनाकर सम्राट अशोक ने बुद्ध धम्म को अपनाया था। कलिंग युद्ध के बाद अपने शासन काल म शांति को स्थापित कर, स्वयं तथा अपनी प्रजा के हित के लिए बौद्ध धम्म के नैतिक मूल्यों को अभिलेखों के माध्यम से दुनीया के सामने रखा। और अपने पुत्र, पुत्री और भिक्षुओंको धम्म प्रचार हेतु देश-विदेशों म भेजा। सम्राट अशोक के शासन काल को दुनिया का एक सुवण युग माना जाता है। और इन्हीं सारी बातोंका सार हम बाबासाहेब डॉ. भीमराव आंबेडकर के चिंतन प्रतिबिम्बित दिखता है। क्योकि जो धम्म हम बुद्ध के द्वारा दिया गया है, इसी भूमी का है, तो फिर इसी भूमी से नष्ट कैसे हो सकता है। केवल उसपर धुल की परत चढ़ सकती ह, जो की अन्य धम के पाखंडिओ द्वारा किया गया है। जो की सामान्य मनुष्य को नहीं दिख सकता। डॉ. आंबेडकर एक मानवतवादी थे, मानव समाज के हितों के चिकित्सक थे, उन्होंने इस धम्म की चिकित्सा की ओर फिर उसी धम्म को पुनजागरुत कर और भी सरल तरीके से समस्त मानवजाती के हित के लिए पुनस्थापित किया। यह एक ऐतिहासिक घटना है जो कभी भी भुलाई नहीं जा सकती।

संक्षेप म शोध विश्लेषण से शोधार्थी निम्न लिखित बिन्दुओं के आधार पर निष्कष पर पहचे ह।

- बौद्ध धम्म के नैतिक मूल्यों म सभी के मानवी मूल्योंको समान दशाता है।

- नैतिक सदाचार का जीवन बौद्ध दशन का मुख्य आधार है।
- बौद्ध धम्म के मूल सिद्धांतों को सम्राट अशोक ने प्रचार-प्रसार किया। उसी धम्म का बाबासाहेब डॉ. भीमराव आंबेडकर के चिंतन प्रतिबिम्बित दिखायी देता है ,भारतीय संविधान के रूप म।
- सम्राट अशोक और बाबासाहेब डॉ. आंबेडकर का चिंतन मानव विकास एवं शांति के लिए आज भी उतनाही प्रासंगिक है।
- सम्राट अशोक का चिंतन एवं काय मानवतावाद एवं जातिविहीन समाज को प्रोत्साहित करता है।
- सम्राट अशोक के बौद्ध धम्म के प्रति विचार निष्ठावान है, इसका सबसे बड़ा प्रमाण उनके अभिलेख है।
- डॉ. आंबेडकर ने जो भारत को एक बहुमूल्य संविधान दिया है , वह बुद्ध धम्म के नैतिक मूल्यों और सम्राट अशोक के सुशासन काल का सार है।
- वतमान म हम बुद्ध के नैतिक मूल्यों को, सम्राट अशोक के सुशासन नीति और बाबासाहेब डॉ. भीमराव आंबेडकर के संविधान इन सभी बातों को समझकर आत्मसात कर उनके दिये हुए माग पर पदक्रमन करना होगा।

अत: इस विषय के अध्ययन से यह निष्कष निकलता है की अगर हम पूरे विश्व म समता, शान्ति और बंधुता को स्थापित करना है, तो हम तथागत भगवान बुद्ध, सम्राट अशोक और बाबासाहेब डॉ. भीमराव आंबेडकर के तत्वज्ञान, विज्ञानवाद,मानवी मूल्यों और समानता को अपनाना होगा उनके विचारों को ग्रहण कर जीवन म आत्मसात करना होगा यही आज की प्रासंगिकता है।